Write the Question No. | Do not write in this margin

मध्यकाल में अवधी का साहित्यिक विकास

यद्यपि तेरहवीं शती में अमीर खुसरो की रचना 'खालिकबारी' में अवधी का स्पष्ट उल्लेख मिलता है; अवधी का वास्तविक साहित्यिक भाषा के रूप में विकास मध्यकाल में हुआ।

→ आदिकाल दामोदर पंडित उक्ति व्यक्ति और रोडा की राउलवेल में संकेत

पूर्वी उत्तर भारत के सूफी कवियों ने अपने प्रेमाख्यानों की रचना हेतु अवधी को चुना। और इसे साहित्यिक भाषा के पद पर आरूढ़ किया।

मुल्ला दाऊद कृत चंदायन/लोरिकहा इस परंपरा की पहली रचना है, जिसके संबंध में कवि स्वयं कहता है —

दाऊद कवि जो चंदा गाई
जेई रे सुना सो गा मुरझाई।

इसके बाद कुतुबन की मिरगावती, जायसी का पद्मावत, उसमान की चित्रावली, कासिम शाह की हंस जवाहिर, नूर मुहम्मद की अनुराग बाँसुरी जैसी अनेक उत्कृष्ट रचनाओं का सृजन हुआ। इनमें सबसे

Scanned by CamScanner

संवाद IAS — SAMVAD — सफलता का पर्याय

UPSC

IAS/PCS TEST SE...

Only Write the Question No.

सुमधुर भाषा जायसी की है।

जायसी ने ठेठ, खालिस अवधी का प्रयोग किया जो अपनी सौंधी खुशबू से पाठक के मन को आह्लादित करती है। इसका माधुर्य 'भाषा' का माधुर्य है, वह संस्कृत की कोमलकान्त पदावली पर आश्रित नहीं है।

भाव की वर्षा मानसून की प्रबल बरसात

दवँगरा, महावट नीक जैसे ठेठ जनभाषा के शब्दों का प्रयोग (नैन चुवहिं जस महावट नीक); हिय फटा जैसे मुहावरे, "बुधि अंगुरी न निकसै घीऊ" जैसी लोकोक्तियां द्वारा भाषा में लोकतत्व की प्रतिष्ठा हुई है।

जायसी की भाषा में दिनिअर, पुहमि जैसे अपभ्रंश के अवधी में ढल रहे शब्दों का प्रयोग भी हुआ है।

सादृश्यमूलक अर्थालंकारों से भी भाषा का सौन्दर्य निखरा है —

पदमिनी गवन हंस गए दूरि।

Scanned by CamScanner

Write the Question No.

Do not write in this margin

प्राकृतिक लोक-बिम्बों ने भाषा की संप्रेषणीयता में वृद्धि की है —

जेठ जरै जग चलै लुवारा
उठै बवंडर धिकै पहारा।

तसव्वुफ के दर्शन की अभिव्यक्ति हेतु कहीं-कहीं भाषा प्रतीकात्मक हो गई है, जो प्रवाह को खंडित नहीं करती —

"तन चितउर मन राजा कीन्हा।
हिय सिंहल बुधि पद्मिनी चीन्हा।"

माधुर्य गुण, मार्मिकता और तरलता से जायसी की भाषा ~~सुशोभित है~~

यह तन जारौं छार कै
कहौं कि पवन उड़ाव।
मकु तेहि मारग उड़ि परै
कन्त धरै जहँ पाव॥

विरह व्यंजना और करुणा की सृष्टि करने में सक्षम हो गई है

कहीं-कहीं भाषा ऊहात्मक हो गयी है किन्तु भाव गांभीर्य बना हुआ है —

दहि कोयला भइ कन्त सनेहा
तोला माँसु रहा नहिं देहा

आचार्य शुक्ल ने कहीं-कहीं व्याकरणिक

Scanned by CamScanner

Only Write the Question No.

शिथिलता (बीजु लजाना), अप्रयुक्तत्व दोष (नहिं जाना बिसवास) और अनुचितार्थत्व दोष भी इंगित किए हैं।

किन्तु कुल मिलाकर जायसी की भाषा अपने ठेठपन के कारण तत्कालीन जनसामान्य द्वारा प्रयुक्त अवधी का श्रेष्ठ उदाहरण है जो हिन्दी साहित्य की अमूल्य थाती है।

मध्यकाल में अवधी का दूसरा साहित्यिक स्वरूप तुलसीदास के कुशल नेतृत्व में रामभक्ति काव्यधारा में पुष्पित-पल्लवित हुआ।

(1) तुलसी की अवधी प्रौढ़, प्रांजल, उन्नत और परिनिष्ठित है। वे संस्कृत काव्य की दीर्घ परंपरा से सुपरिचित थे। उन्होंने संस्कृत के शब्दों का अवधीकरण कर तत्सम शब्दों को अपनी भाषा में घुला-मिला दिया है -

भगवनी, बान, ककेना, लोचनु आदि

लोचनु जलु रह लोचनु कोना
जैसे परम कृपन कर कोना

Scanned by CamScanner

(2) उन्होंने समन्वयवादी दृष्टिकोण का परिचय देते हुए फारसी के कुछ शब्द (अफसोस, गरीबनिवाज) का भी प्रयोग किया है। साथ ही भोजपुरी, राजस्थानी, ब्रजभाषा के भी शब्दों - प्रयोगों को घुला मिला दिया है। लोचशीलता में वृद्धि।

(3) ध्वनिमैत्री उनकी भाषा का विशेष गुण है। भाव के साथ ध्वनि की तरंगें उठाने- गिराने में वे अद्वितीय हैं। इस प्रसंग में वानरसेना के प्रस्थान का वर्णन द्रष्टव्य है-

"कटकटहिं मर्कट बिकट भट
कोटि कोटिन्ह धावहीं।"

(4) अनुप्रास के तो वे बादशाह हैं (कहि कहि कोटिक कपट कहानी)। साथ ही भाषा को मौलिक और सांगरूपक और उपमाओं के संतुलित प्रयोगों से सजाने में वे निपुण हैं। उनका यह कथन महत्त्वपूर्ण है -

"सब उपमा कवि रहे जुठारी।
केहि पटतरौं बिदेह कुमारी।"

Scanned by CamScanner

Only Write the Question No.

(5) बिंबात्मकता से भाषा में सजीवता आ गई है और वह ऐन्द्रिक अनुभूति का माध्यम बन जाती है —

(6) माधुर्य, प्रसाद, ओजगुण से सम्पन्न है। रसवैविध्य को धारण करती है।

(7) संज्ञा से क्रिया (उपदेसऊ, पीड़हि) और क्रिया से संज्ञा का निर्माण करने में भी सहज है।

मध्यकाल में हिन्दू प्रेमाख्यानकारों जैसे दुखहरन, गोवर्धनदास कवियों ने जायसी और तुलसी की भाषा का (शैलियों) मिश्रित रूप प्रयुक्त किया।

कुल मिलाकर मध्यकाल में अवधी एक बोली न रहकर गंभीर कलात्मक काव्य भाषा बन गई जिससे नैतिकता, मूल्यों, आदर्शों की स्थापना हेतु प्रबंध ग्रंथों के अनुकूल बन गई।

Scanned by CamScanner

ब्रजभाषा - साहित्यिक भाषा

सूरपूर्व ब्रजभाषा साहित्य

1) डॉ. धर्मेन्द्र के अनुसार रासो काव्य की पिंगल शैली ब्रजभाषा का पूर्ववर्ती रूप है। शृंगार संबंधित छन्दों की रचना पिंगल में हुई है जिसमें माधुर्य गुण की प्रधानता है।

2) नाथ साहित्य में भी ब्रजभाषा के कुछ संकेत मिलते हैं।
ण ध्वनि तथा ऐ, औ का संध्यक्षरों के रूप में उच्चारण तथा भविष्य काल में मात्र ह रूपों का प्रयोग (करहिं, किरहैं) (करेंगो आदि का अभाव इसकी भाषा की विशेषताएँ हैं।

3) अमीर खुसरो के साहित्य में ब्रजभाषा का कलात्मक प्रयोग हुआ है।
मुकरियों में ब्रजभाषा का शुद्ध रूप प्रकट हुआ है -
मेरा मोसे सिंगार करावत
कहीं-कहीं खड़ी बोली के साथ मिश्रित प्रयोग

Scanned by CamScanner

खुसरो रैन सुहाग की, जागी पी के संग
तन मेरो मन पिउ को, दोउ भए एक रंग

फारसी व ब्रजभाषा के संश्लेषण का अद्‌भुत प्रयोग भी खुसरो ने किया है –

जे हाल मिसकीं मुकुन तगाफुल
दुराय नैना बनाए बतियाँ।
कि ताबे हिज्रा न दारम ऐ जाँ।
न लेहु काहे लगाय छतियाँ।।

→ इसके अलावा प्रद्युम्न चरित्र, रुक्मिणी चरित्र, नामदेव व सिख गुरुओं के कुछ पदों में भी ब्रजभाषा की उपस्थिति देखी जा सकती है।

कृष्णभक्ति काव्य

① ब्रजभाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में चरम विकास कृष्णभक्ति काव्यधारा में हुआ। सूर ने चलती हुई ब्रजभाषा को अल्पकाल में गंभीर, प्रगल्भ, विलक्षण काव्यभाषा में परिवर्तित किया।

Scanned by CamScanner

2) सूरदास ने ब्रजभाषा के सौन्दर्य और माधुर्य को इस तरह सँवारा कि अगले सैकड़ों वर्षों तक वह वात्सल्य और शृंगार की सर्वमान्य भाषा बन गई।

3) सूर की ब्रजभाषा संगीतात्मकता से लैस है। लोकसंगीत तथा शास्त्रीय संगीत दोनों के अनुकूल है। राग गौरी, मल्हार व सारंग में रचित पद विशेष प्रसिद्ध हैं —

"निर्गुन कौन देस को बासी?
मधुकर हँसी समुझाय, सौंह दे
बूझति साँच न हाँसी॥" (राग सारंग)

4) उन्होंने मुहावरों - लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में लोकजीवन को सजीव कर दिया है —

नंद ब्रज लीजै ठोकि बजाय (मुहावरा)

दाख छाँडि़कै कटुक निबौरी,
को अपने मुँह लैहै? (लोकोक्ति)

Scanned by CamScanner

Only Write the Question No.

(5) शुद्धाद्वैतवाद में आस्था के कारण उन्होंने जगत को लीला माना। अतः प्रकृति और लोकजीवन के चित्रों से भाषा में बिंबात्मकता विद्यमान है। एकल-संश्लिष्ट, लक्षित-उपलक्षित, स्पर्श-घ्राण-दृश्य सभी बिंबों से सूर ने भाषा को जीवन्त बनाया है। इससे भाषा ऐन्द्रिक अनुभूति का विषय बन जाती है।

जसोदा हरि पालने झुलावै
हलरावै मल्हरावै जोई सोई कछु गावै

(6) सूर कम शब्दों में गहरी बात की व्यंजना करने में भी सिद्धहस्त हैं—

ऊधो कोकिल कूजत कानन

(7) सूरदास ने ब्रजभाषा को अलंकारों से सजा दिया है। अप्रस्तुत विधान की प्रत्येक संभावना को उन्होंने उभारा है। आचार्य द्विवेदी ने कहा है कि जब वे उपमा देने लगते हैं तो अलंकार शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे चलता है।

Scanned by CamScanner

Do not write in this margin

(8) सूरदास मानव मन के चितेरे हैं। अतः सभी भावनाओं - मनोदशाओं की व्यंजना हेतु भाषा सक्षम बन गई। उनके यहाँ जितनी सहृदयता है उतनी ही वाक्विदग्धता भी। प्रेम, अभिलाषा, कसक, क्षोभ, क्रोध ईर्ष्या सभी मनोभावों को वक्रता और उपालंभ के जरिए अभिव्यक्त किया गया है।

निश्चय ही सूरदास ने ब्रजभाषा को ऐसा तराशा कि वह अखिल भारतीय काव्यभाषा बनने के लिए सक्षम हो गई। लालित्य, तरलता, चांचल्य जैसे गुणों से ब्रजभाषा सम्पन्न हो गई।

1) अष्टछाप के अन्य कवियों ने भी ब्रजभाषा को सँवारा। नंददास ने तत्सम शब्दों का ब्रजभाषाकरण किया तो परमानंददास ने ठेठ शब्दों का प्रयोग (जोग, सुच्छम) (मडकिया, अँचरा)

2) सम्प्रदाय विरहित कवियों में मीरा ने ब्रज और राजस्थानी का समन्वय किया

Scanned by CamScanner

Only Write the Question No.

रहीम ने ब्रज और खड़ी बोली को मिलाया तो रसखान ने शुद्ध ब्रजभाषा में भाव-प्रवण रचनाएँ की।

9) सूरदास ने जेहि तेहि जैसे अवधी, आपन, गोड़, हमार जैसे भोजपुरी और महँगी के अर्थ में व्यारी जैसे पँजाबी प्रयोगों से ब्रजभाषा की लोचशीलता बढ़ाई।

तुलसी काव्य में ब्रजभाषा

तुलसी के कीर्तिस्तम्भ मानस की रचना अवधी में हुई है; किन्तु ब्रजभाषा पर भी उनका समान अधिकार था। तुलसी की ब्रजभाषा में तत्सम शब्दों की सूर की अपेक्षा अधिकता है।

Scanned by CamScanner

कवितावली का उदाहरण प्रस्तुत है -
"राम को रूप निहारती जानकी,।
कँगन के नग की परछाँई॥"

रीतिकाल में ब्रजभाषा

रीतिकाल में ब्रजभाषा का चरम विकास हुआ और यह मात्र ब्रजमंडल की भाषा नहीं रही। कवितर भिखारीदास कहते हैं -

"ब्रजभाषा हेत ब्रजबास ही न अनुमानों।"

रीतिकाल में भक्ति के आवरण से मुक्त हो ब्रजभाषा लौकिक शृंगार की व्यंजना का माध्यम बनी।

रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध कवियों के यहाँ चमत्कार प्रियता, ध्वनि सौन्दर्य, बिम्बात्मकता, छंद की विविधता, समास शक्ति, अलंकारिता के गुणों से भाषा सजायी - सँवारी गई।

रीतिमुक्त कवियों ने सहज गंभीर, ~~अर्थतत्व~~ से आपूरित भाषा का प्रयोग किया। इनमें घनानंद अग्रणी हैं।

Scanned by CamScanner

Only Write the Question No.

उन्होंने वचन वक्रता और विरोधाभास अलंकारों का प्रचुर प्रयोग कर संवेदनात्मक भाषा को अपनाया -

"उजरनि बसि है हमारि
अँखियानि देखो।"

भूषण जैसे कवियों ने ओजगुण सम्पन्न ब्रजभाषा में वीर रस की कविताएं सृजित की

तेज तम अंस पर
कान्ह जिमि कंस पर
त्यों म्लेच्छ बंस पर
सेर सिवराज है

नरसी मेहता पर भी प्रभाव दिखता है। चैतन्य महाप्रभु और शंकरदेव ने ब्रजबुलि को गढ़ा

शृंगार और मुक्तक के लिए यह प्रसिद्ध हुई।

ग्वालियर, ओरछा, जयपुर जैसे राज्यों में भी यह काव्यभाषा बन गयी।

Scanned by CamScanner

अपभ्रंश

1) अपभ्रंश का शाब्दिक अर्थ है भ्रष्ट भाषा। व्याडि, पतंजलि, दण्डी आदि संस्कृत वैयाकरणों ने भाषा के उस रूप को अपभ्रंश कहा जिसमें संस्कृत के शब्दों के विकृत रूपों का प्रयोग होता है।

2) अपभ्रंश मध्यकालीन आर्यभाषाओं की तीसरी अवस्था है (पालि → प्राकृत → अपभ्रंश) इसका समय लगभग 500 से 900/1000 ईस्वी सन् तक है, यद्यपि साहित्य में इसका प्रयोग कई शताब्दियों तक होता रहा।

3) डॉ. हरदेव बाहरी जैसे कुछ विद्वान इसे उत्तरी पूर्व भारत की एक विशिष्ट भाषा मानते हैं। उनके अनुसार अपभ्रंश आभीरों की भाषा थी जो आर्य संस्कृति में पूर्णतः दीक्षित नहीं हुए थे। धीरे-धीरे आभीर, जाट, राजपूतों की भाषा पर शौरसेनी ~~अपभ्रंश~~ प्राकृत का प्रभाव

Scanned by CamScanner

Write the Question No. | Do not write in this margin

हिन्दी एक आधुनिक भारतीय आर्यभाषा है।

- विश्व की भाषाएँ
  - आर्य भाषा परिवार
    - यूरोपीय
    - भारतीय आर्य भाषा
      - प्राचीन
        - वैदिक संस्कृत (2000 ई.पू. से 1000 ई.पू.)
        - लौकिक संस्कृत (1000 ई.पू. से 500 ई.पूर्व)
      - मध्यकालीन
        - पालि [500 से 0]
        - प्राकृत [0 से 500]
        - अपभ्रंश [500 से 900]
        - अवहट्ट [900 से 1100]
      - आधुनिक
        - पुरानी हिन्दी 1100 से 1350
        - मध्यकालीन 1350 से 1850
        - आधुनिक हिन्दी
    - दरद ····› डोंगरी
    - ईरानी
  - अनार्य
    - चीनी - तिब्बती ····· उत्तर पूर्व
    - कोल/मुण्डा/ऑस्ट्रिक ····› संथाली
    - द्रविड़ ····› दक्षिण भारत की भाषाएं

Do not write in this margin

पड़ा। अपभ्रंश राजभाषा और साहित्यिक भाषा के पद पर आसीन हुई। राज्य-विस्तार के साथ इसका प्रसार अन्य क्षेत्रों की भाषाओं पर भी पड़ा और इस प्रकार यह समूचे उत्तर भारत में फैल गई।

डॉ. सुनीति कुमार चॅटर्जी, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा जैसे भाषाविदों का मत है कि अपभ्रंश मध्यकालीन आर्यभाषा के विकास की एक भाषिक स्थिति है और प्रत्येक प्राकृत की एक अपभ्रंश स्थिति थी।

इस विवाद को सुलझाने हेतु अधिक शोध की आवश्यकता है। किन्तु यह माना जा सकता है कि यह विकास प्रक्रिया की एक अवस्था थी जिसके भौगोलिक भेद थे। इनमें उत्तर-पूर्व की अपभ्रंश सबसे समृद्ध होने के कारण इसका प्रभाव अन्य अपभ्रंशों पर पड़ा।

Scanned by CamScanner

Only Write the Question No.

अपभ्रंश के भेद

1) विवादास्पद और जटिल प्रश्न है।
- भाषा या भाषिक विकास की अवस्था
- साहित्य कम मात्रा में उपलब्ध

2) प्रदेश विशेष की भाषा मानने वालों ने सीमित भेद प्रस्तुत किए हैं।

(i) नमिसाधु
उपनागर
आभीर
ग्राम्य

(ii) मार्कण्डेय
नागर - गुजरात
उपनागर - राजस्थान
व्राचड़ - सिन्ध

(iii) डॉ नामवर सिंह मार्कण्डेय द्वारा वर्णित नागर और नमिसाधु द्वारा उल्लेखित उपनागर को परिनिष्ठित अपभ्रंश कहा है।

(iv) डॉ. तगारे

भेद भौगोलिक क्षेत्र साहित्य

पूर्वी अपभ्रंश :- सिद्ध साहित्य — मध्य देश का पूर्वी भाग
पश्चिमी अपभ्रंश :- जैन साहित्य, कालिदास (~~...~~ पाहुड़ दोहा) — गुजरात राजस्थान
दक्षिणी अपभ्रंश :- जसहर चरिउ, महापुराण — बरार

3) डॉ. धीरेन्द्र वर्मा इसे अवस्था मानते हैं।
शौरसेनी
मागधी
अर्धमागधी
पैशाची
महाराष्ट्री

डॉ. चटर्जी ने खस और राजस्थानी को भी प्राकृत और अपभ्रंश का भेद माना है।

4) प्रामाणिकता हेतु अधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

अध्ययन के स्रोत

1) शिलालेख और साहित्यिक रचनाएँ
2) सिद्ध, नाथ, रासो, जैन साहित्य
3) कालिदास के नाटकों में निम्नवर्ग के पात्र भी अपभ्रंश का प्रयोग करते हैं।

ध्वनि संरचना

1) निम्नलिखित स्वर प्रयुक्त होते थे
हृस्व : अ, इ, उ, ऍ, ऑ
दीर्घ : आ, ई, ऊ, ए, ओ
ऐ, औ का प्रयोग नहीं होता था।

2) उकार बहुलता और ट वर्ग की प्रधानता

3) ऋ का अ, इ, उ, ए में परिवर्तन
कृष्ण > कण्ह
ऋण > रिण
गृह > गेह

4) व्यंजनों में इन सात का अभाव है -
ड़, ढ़, न, य, ङ, श, ष

5) अल्पप्राण व्यंजन 'अ' या 'य' में परिवर्तित होते थे
वचन > वयण, लोचन > लोयण

6) महाप्राण व्यंजन 'ह' में परिवर्तित होते थे
दधि > दही

7) संयुक्त व्यंजन क्ष का रव्व में परिवर्तन
द्राक्षा > दाखख

8) व्यंजन संयोग को सरल बनाने हेतु स्वरभक्ति की प्रवृत्ति
क्रिया > किरिया
(व्यंजन संयोग के मध्य स्वर लाया जाना)

9) द्वित्वीकरण द्वारा व्यंजन संयोग को सरल बनाया जाता था।
चक्र > चक्क
कर्म > कम्म

10) अनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति
चलहि > चलहिं

11) निरनुनासिकीकरण एवम दीर्घीकरण की प्रवृत्ति
सिंह > सीह
विंशति > वीस

Only Write the Question No.

अपभ्रंश की व्याकरणिक संरचना

संज्ञा तथा कारक व्यवस्था

1) सभी प्रातिपदिक स्वरांत हो गए जिसके कारण शब्दरूपों की विविधता और जटिलता कम हुई।

जगत् > जग

2) अनेक कारकों के विभक्ति रूप समान होने लगे –

(संस्कृत के २४, प्राकृत के १२ के स्थान पर एक शब्द के मात्र 6 रूप)

- कर्ता, कर्म, संबोधन का एक रूप
- करण, ~~अपादान~~, अधिकरण।
- सम्प्रदान अपादान संबंध का एक रूप

3) हिं विभक्ति से अनेक कारकों का बोध होता था।

4) वियोगीकरण की प्रवृत्ति की दिशा में स्वतंत्र परसर्गों का प्रयोग भी होने लगा

उदाहरण: सम्बन्ध कारक के लिए का परसर्ग

अधिकरण : मज्झ

करण : तण

वचन

द्विवचन का लोप, द्विवचन के सारे रूप बहुवचन में शामिल हुए।

लिंग

नागर अपभ्रंश के अलावा नपुंसक लिंग का लोप, पुल्लिंग में शामिल

विशेषण

संख्यावाची विशेषणों का विकास

बारह, इगारह

सर्वनाम

रूपों में जटिलता कम होने लगी + आधुनिक हिन्दी के निकट आने लगे

उत्तम –	मईं, अम्हे, अम्हार, मोर
मध्यम –	तुं, तुज्झ, तुम्हारा, तोर
अन्य –	ओई, एइ
अन्य सर्वनाम –	आपण्ण, कोउ

पदक्रम

अयोगात्मकता के कारण अर्थबोध की स्पष्टता हेतु वाक्य में पदक्रम निश्चित होने लगा।

107 Jyoti Bhawan, Mukherjee Nagar Comm, Complex, Delhi-09 Ph.: 09891360366, 09213162103, 011-276… 09709655008 Page N

Scanned by CamScanner

Only Write the Question No.

क्रिया संरचना

1) उठ, बोल जैसी नई धातुएँ विकसित हुई।

2) तिङंतीय क्रियारूपों के स्थान पर कृदन्तीय रूप और सहायक क्रियाओं का विकास हुआ।

3) वर्तमान काल संस्कृत की परंपरा में, भूतकाल कृदन्तों के आधार पर और भविष्यकाल दोनों परंपराओं में चलता है। भविष्यकाल के दो रूप

स - चलिसई

ह - चलिहिय

Only if exclusively writing on अपभ्रंश

3) संयुक्त क्रियाओं का आरंभ हुआ

आगा एन्ते, रडणतउ जाई

4) पूर्वकालिक क्रियाओं के लिए इ प्रत्यय का प्रयोग होने लगा

करि, पढि

संवाद UPSC IAS/PCS/JRF TEST SERIES

Do not write in this margin

शब्दकोशीय विशेषताएँ

1) शब्द भण्डार में सबसे अधिक मात्रा तद्भव शब्दों की थी।

कम्म, धम्म, किरिया, अंस्तु

2) सारी संख्याएँ तद्भव थीं

बारह, दस, तीस

3) देशज शब्दों को तेजी से आत्मसात किया गया।

ध्वन्यात्मक : किलकिल, खुण-खुण

धातुएँ : थक्क, तड़पड

गृहस्थी की वस्तुएँ : रस्सी, मुग्ग

4) अन्तिम काल में विदेशी संस्कृति के आगमन से अनेक विदेशज शब्दों को स्वीकार किया गया।

तहसील, नौबत, कमाल

5) सरलीकरण की प्रक्रिया में अनेक शब्द दुर्बोध हो गए। अतः अन्तिम अवस्था में तत्सम शब्दों का प्रयोग बढ़ने लगा।

सुप्त, सूत्र, सूक्त - सभी सुत्त हो गये थे।

Scanned by CamScanner

Only Write the Question No.

अवहट्ट

1) अवहट्ट शब्द संस्कृत शब्द अपभ्रष्ट का तद्भव रूप है। पहले इसे अपभ्रंश का समानार्थी शब्द माना जाता था तथा अवहट्ट को पूर्वी अपभ्रंश माना जाता था।

2) किन्तु अब यह स्वीकार किया जा चुका है कि अवहट्ट एक स्वतंत्र भाषिक अवस्था है जो उत्तरकालीन अपभ्रंश की लोकभाषाओं से निकटता में वृद्धि के परिणाम स्वरूप विकसित हुई।

3) इसका काल नवीं से ग्यारहवीं शती तक माना गया है, यद्यपि साहित्य में इसका प्रयोग चौदहवीं शती तक होता रहा।

4) मध्यकालीन आर्यभाषा की अन्तिम अन्तिम अवस्था (अपभ्रंश) और आधुनिक आर्यभाषा की पहली अवस्था पुरानी हिन्दी के संधिकाल की यह भाषा है।

Do not write in this margin

अध्ययन के स्रोत

1) ज्योतीरीश्वर ठाकुर लिखित वर्ण रत्नाकर, विद्यापति की रचना कीर्तिलता और अद्दहमाण कृत 'संनेह रासक' इसकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

2) प्राकृत पैंगलम् के कुछ अंश, नेमिनाथ चौपाई और चर्यापदों को भी अवहट्ट की रचनाएँ माना गया है।

ध्वनि संरचना

1) ट वर्ग प्रधानता कुछ कम हुई।
2) ऐ, औ का प्रयोग होने लगा।
3) ऋ > अ, रि, ए
4) ड़, ढ़ का प्रयोग होने लगा।
5) अल्पप्राण व्यंजन > अ, य
6) महाप्राण व्यंजन > ह
7) क्ष > ख्ख
8) स्वरभक्ति
9) अपभ्रंश के द्वित्वीकरण के स्थान पर क्षतिपूरक दीर्घीकरण कम्म > काम
10) अनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति बनी रही।
11) निरनुनासिकीकरण की विशेष प्रवृत्ति नहीं दिखती।

2) पूर्व
ड़ > ल पलिहार
पश्चिम
स > ह
संदेस > संनेह

संज्ञा तथा कारक व्यवस्था

1) अपभ्रंश की सभी प्रवृत्तियाँ
2) नए परसर्गों का विकास
   करण = तें
   सम्प्रदान = लागि
3) हिं विभक्ति के साथ ए विभक्ति का विकास (डॉ. तगारे)

वचन

बहुवचन के तिर्यक रूपों में न्ह, न्हि प्रत्यय : पुहुपुन्हि हाथन्ह

लिंग

नपुंसक लिंग पूर्णतः समाप्त

विशेषण सार्वनामिक विशेषणों का इस प्रकार विकास : अइसा, कित्ता

सर्वनाम

मैं, तुम, मेरा, वह जैसे रूपों का विकास

पदक्रम

कर्ता - कर्म क्रिया

क्रिया संरचना

1) संयुक्त क्रियाओं का तीव्र विकास
   उठि गेल, बोलि जाअ
2) पूर्वी व पश्चिमी में भेद स्पष्ट होने लगे

	पूर्वी	पश्चिमी
वर्तमान	त रूप (जात)	न्ता (करन्ता)
भूतकाल	ल रूप (चलल)	क (जात थका) / जाथका
भविष्य	ब (खाइब)	ह (आयहिं)

3) पूर्वकालिक क्रियाओं के लिए इ प्रत्यय
   पढ़ि, सुनि, सुनिअ

शब्दकोशीय विशेषताएँ

1) तत्सम शब्दों और देशज शब्दों का अनुपात अर्द्ध अपेक्षा बढ़ गया।
2) तद्भव शब्द सर्वाधिक बने रहे।

Only Write the Question No.

पुरानी हिन्दी

1) पुरानी हिन्दी आधुनिक आर्य भाषा (हिन्दी क्षेत्र की) की प्रारंभिक अवस्था है जब पहली बार हिन्दी की विभिन्न बोलियाँ स्वतंत्र रूप से प्रकट होने लगी।

2) यह अवहट्ट और मध्यकालीन ~~[illegible]~~ बोलियों के बीच की स्थिति है।

3) इसका काल 1100 से 1350 के बीच का माना जाता है।

4) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी ने इसे पुरानी हिन्दी कहा तो आचार्य द्विवेदी ने उत्तरकालीन अपभ्रंश।

5) आचार्य शुक्ल आठवीं शती के अपभ्रंश से ही पुरानी हिन्दी का प्रारंभ मानते हैं।

Do not write in this margin

आधार सामग्री

1) विवादास्पद प्रश्न है।

2) विद्यापति के पद, अमीर खुसरो के कुछ छंद माने गए हैं (स्रोत)

3) रासो का समावेश भी किया जाता है।

4) रोड़ा कृत राउलवेल पर विद्वानों की प्रायः सहमति है।

ध्वनि संरचना

1) ट वर्ग की प्रधानता है किन्तु अपेक्षाकृत कम।

2) ऐ, औ का व्यापक प्रयोग

3) ऋ > रि, ए, आ

4) पूर्वी हिन्दी में न का प्रयोग

ड़, ढ़ का व्यापक प्रयोग

श, ष > स (प्रवृत्ति बनी रही)

6) महाप्राण व्यंजन > ह

5) अल्पप्राण > अ, य

7) क्ष > ख (पश्चिमी) लखन

क्ष > छ (पूर्वी) लछिमन

8) स्वरभक्ति 9) क्षतिपूरक दीर्घीकरण

10) अनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति कम 11) निरनुनासिकीकरण की कोई विशेष प्रवृत्ति नहीं दिखती

संज्ञा - कारक व्यवस्था

1) बिभक्ति प्रयोग लगभग लुप्त।
2) परसर्गों का तीव्र विकास
   - कर्ता - नें
   - कर्म - को
   - करण - तइ, सैं, तें
   - सम्प्रदान - लागि, हित
   - संबंध - का, केर, की
   - अधिकरण - मह, माह, पें, पर

वचन

पुल्लिंग - ए, अन (तिर्यक)
बेटे, बेटन

स्त्रीलिंग - न्ह, अन
सखिअन

लिंग

स्त्रीलिंग शब्द प्रायः इकारान्त
आगि, धरनि

विशेषण

1) संख्यावाची 2) सार्वनामिक
3) विशेष्यानुसार परिवर्तन पीतवसन > पीरो वसन

क्रिया संरचना

1) अवहट्ट की सभी प्रवृत्तियाँ
2) संज्ञार्थ क्रिया (ण और ब रूप)
   चलण, चलिबो

शब्द

अवहट्ट के समान

हिन्दी का विकास संस्कृत की परंपरा में हुआ। संस्कृत संयोगात्मक भाषा है, जबकि हिंदी वियोगात्मक।
"पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → अवहट्ट → पुरानी हिन्दी" इस क्रम में क्रिया और शब्दरूपों में वियोगात्मकता के तत्व क्रमशः बढ़ते गए। परसर्गों के विकास और कृन्दतीय एवम सहायक क्रियाओं के आधार पर। तद्भवीकरण सरलीकरण पदों के संदर्भ में तद्भवीकरण के द्वारा तथा देशज शब्दों के अंगीकार द्वारा हुआ।

Scanned by CamScanner

अपभ्रंश का योगदान

संस्कृत जैसी संयोगात्मक भाषा से हिन्दी जैसी वियोगात्मक भाषा का उदय हुआ। सरलीकरण की इस प्रक्रिया में अपभ्रंश का अभूतपूर्व योगदान है।

ध्वनि संरचना

1) ऌ, ॠ का लोप, ऋ का अ, ए, रि. में परिवर्तन अपभ्रंश में हुआ।

2) ड़ और ढ़ ध्वनियों का प्रयोग भी पहली बार अपभ्रंश में हुआ।

3) विसर्ग के लोप की प्रवृत्ति हिन्दी में बनी रही।

4) ङ, ञ के स्थान पर अनुस्वार के प्रयोग की प्रवृत्ति भी अपभ्रंश की देन है।

5) संयुक्त व्यंजनों के सरलीकरण, द्वित्वीकरण- क्षतिपूरक दीर्घीकरण और स्वरभक्ति के द्वारा हिन्दी को अनेक तद्भव शब्द मिले - मुखिया, काम

व्याकरणिक संरचना

1) द्विवचन और नपुंसक लिंग का लोप महत्वपूर्ण अवदान है।

2) निर्विभक्तिक पदों तथा परसर्गों के विकास से वियोगात्मकता का मार्ग प्रशस्त हुआ। हिन्दी के अधिकांश परसर्गों का पूर्ववर्ती रूप अपभ्रंश में मिलता है।

सई, सेंति → से

मज्झ → में

3) हिन्दी के अधिकांश सर्वनामों का विकास अपभ्रंश से हुआ है।

मई > मैं

तुम्ह > तुम

4) सार्वनामिक विशेषणों तथा संख्यावाची विशेषणों पर अपभ्रंश का प्रभाव स्पष्ट रूप से लक्षित होता है।

जइसा > जैसा

एक्क > एक

Scanned by CamScanner

Only Write the Question No.

5) संदेशरासक, बीसलदेव रासो जैसे लोककाव्य का सृजन हुआ। हिन्दी साहित्य का लोक के प्रति झुकाव इसी प्रवृत्ति से जोड़ा जा सकता है।

6) शिल्प के स्तर पर भी प्रभावित किया।

(i) संस्कृत के वर्णिक छन्दों और वृत्तों के स्थान पर मात्रिक छन्दों (दूहा, गाहा, छप्पय) और तुकान्तता की प्रवृत्ति का विकास अपभ्रंश में हुआ। यही प्रवृत्ति हिन्दी में बनी रही।

(ii) कड़वकबद्ध शैली में रचना की परंपरा का उदय भी अपभ्रंश में हुआ।

(iii) चाँचरी, फाग, पद जैसे काव्यरूप

(iv) मंगलाचरण, सज्जन प्रशंसा, दुर्जन निंदा, मुक्तक काव्य में कवि का नामोल्लेख जैसी काव्यरूढ़ियाँ और शुक-शुकी संवाद जैसी कथानक रूढ़ियों के प्रयोग की परंपरा

स्वप्नदर्शन, बारहमासा

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

पहाड़ी हिन्दी

- हिन्दी प्रदेश के उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रों में प्रयुक्त बोलियों को पहाड़ी हिन्दी उपभाषा वर्ग में समाविष्ट किया जाता है।
- इसके अन्तर्गत दो बोलियाँ आती हैं - गढ़वाली और कुमाऊँनी।

बोली	क्षेत्र
गढ़वाली	टेहरी, पौड़ी
कुमाऊँनी	नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरगढ़

विकास

- पहाड़ी हिन्दी का उद्‌भव संस्कृत की परंपरा में खस प्राकृत और खस अपभ्रंश से हुआ। साथ ही तिब्बती - चीनी और स्थानीय अनार्य भाषाओं का प्रभाव भी रहा।
- विकास की प्रक्रिया में अनार्य तत्व क्षीण होते गए और राजस्थानी और ब्रजभाषा का प्रभाव बढ़ता गया।

ध्वनि व्यवस्था

- स्वानुनासिक स्वरों की अधिकता है, विशेषतः गढ़वाली में।
- कुमाऊँनी में राजस्थानी के प्रभाव से ण और ळ ध्वनियाँ शामिल हुई हैं।
- कुमाऊँनी में कौरवी के प्रभाव से अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति भी परिलक्षित होती है।

Scanned by CamScanner

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

भोजपुरी

- जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ी बोली है।
- उत्तरप्रदेश के गोरखपुर, बलिया, बनारस, देवरिया और बिहार के आरा, छपरा, सीवान के साथ साथ झारखंड के राँची, पालामू का समावेश भोजपुरी क्षेत्र में होता है।

ध्वनि व्यवस्था

(i) अ वृत्ताकार और संवृत्त होता है।

(ii) ण के स्थान पर न, ड़ के स्थान पर र तथा श/स के स्थान पर ह का प्रयोग होता है।

बान, शरक, निहचय

(iii) न्द का परिवर्तन न के रूप में होता है

बुन्दी > बुनि

(iv) ऐ औ का उच्चारण संध्यक्षरों के रूप में होता है।

पइसा, गउना

(v) संगीतात्मक स्वराघात भोजपुरी की विशेषता है।

संज्ञा एवम् कारक

(i) संज्ञा के तीन रूप मिलते हैं।

घोरा, घोरउवा, घोरउना

(ii) परसर्ग अवधी से काफी मिलते हैं; किन्तु कुछ विशिष्ट परसर्गों का प्रयोग भी होता है।

कारक	परसर्ग
कर्म-संप्रदान	का, के खातिर
करण	ले

कर्ता के साथ परसर्ग नहीं जुड़ता

Scanned by CamScanner

लिंग

स्त्रीलिंग संज्ञाएं प्रायः इकारान्त या ईकारान्त होती हैं।

भुखि, आगि, नातिनि, बहिनी

वचन

- बहुवचन में संज्ञा अपरिवर्तित रहती है या लोगन जैसे शब्द जोड़े जाते हैं।
- तिर्यक रूपों में न जुड़ता है : लइकन

सर्वनाम

- काफी विविधता और रूपों में जटिलता है।
- हम का प्रयोग एकवचन के रूप में होता है और उसका बहुवचन 'हमनी' होता है।
- मध्यम पुरुष आदरसूचक रउआ सर्वनाम विशिष्ट है।
- संक्षिप्त तालिका

उत्तम पुरुष	हमनी, हमराके, हमार
मध्यम पुरुष	तोहनी, तोहराके, तोरा
अन्य पुरुष	उ, ओकर
निश्चयवाचक	इ, एकर

क्रिया व्यवस्था

कृदन्त

वर्तमान	त रूप	देखत
भूत	ल रूप	देखल, देखलस
भविष्य	ब रूप	देखब

Scanned by CamScanner

- सहायक क्रियाऐं

काल	रूप	उदाहरण
वर्तमान	बाटे	बाड़ी, बाड़ा बाटेऊ
भूत	रह	रहली रहला
~~भविष्य~~		

- क्रियार्थ संज्ञा ल रूप होति हैं।
  देखल

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या
(Question No.)

U.P.S.C.

मगही

- पटना, गया, हजारीबाग, पलामू *
- राजधानी होने के कारण इतर क्षेत्रों से संपर्क अधिक रहा। अतः भोजपुरी, मैथिली और मानक भाषा का गहरा प्रभाव पड़ा
- (ध्वनि) और (व्याकरण) व्यवस्था भोजपुरी से बहुत मिलती है।
- सम्प्रदान – लेल (संज्ञा - परसर्ग)
  अधिकरण – मो
  विशिष्ट परसर्ग हैं।
- (सर्वनाम)
  रउआ के स्थान पर आप का प्रयोग होता है।
- (क्रिया) रूप भोजपुरी से मिलते हैं। विशिष्ट सक्रिया:
  - बाटे का प्रयोग कम होता है, 'ह' रूप अधिक प्रचलित हैं।
  - हकी (थी) विशिष्ट सहायक
    हलखिन (थे) क्रियारूप
- (साहित्य)
  संत → बाबा मोहनदास, बाबा हेमनाथ
  आधुनिक → जयनाथपति
  लोकसाहित्य में गोपीचन्द और लोरिक प्रसिद्ध है।

Scanned by CamScanner

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

मैथिली

- साहित्यिक दृष्टि से सर्वाधिक उन्नत एवम् समृद्ध
- मधुबनी, दरभंगा, पूर्णिया, सहरसा
- अंगिका, बज्जिका उपबोलियाँ हैं।

ध्वनियाँ

(i) अ अधिक वृत्ताकार होता है।

(ii) शब्द के अन्त में आने वाले अ का स्पष्ट उच्चारण होता है, हलन्त उच्चारण की प्रवृत्ति कम है।

(iii) ह्य का उच्चारण ज्झ जैसा होता है।

ग्राह्य → ग्राज्झिय

(iv) अन्य भोजपुरी के समान

व्याकरणिक व्यवस्था

संज्ञा एवम् कारक व्यवस्था

- तीन रूप
- कर्ता के साथ परसर्ग नहीं जुड़ता

कर्म, सम्प्रदान	कें
करण-अपादान	सैं, सौं
सम्बंध	क, केर
अधिकरण	मैं, में

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

वचन

सबहिं, लोकन आदि शब्द जोड़कर बहुवचन रूप बनते हैं।

लिंग

स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में ई अथवा इया होता है।

157
128
94
122
124
307
932
190
1122

सर्वनाम

सर्वनाम रूपों की संक्षिप्त तालिका

उत्तम पुरुष	हम, हमनी, मोर, हमरा
मध्यम	तू, तोहनी, अहाँ
अन्य	ओहि, इनकर
निश्चयवाचक	ए, हिन्हि

क्रिया

→ कर्ता व कर्म के आदर/अनादर के आधार पर क्रियारूपों में परिवर्तन होता है जिससे विविधता और जटिलता है।

→ सहायक क्रियाएं

वर्तमान	छ छिक	छिअइ, छौन छिकएन्ह, छिकथिन्ह
भूत	छल	छलइ, छविएन्ह
भविष्य	ब	

Scanned by CamScanner

- गढ़वाली की क वर्गीय ध्वनियाँ कण्ठ और काकल के बीच में बोली जाती है और च वर्गीय ध्वनियाँ अधिक संघर्षी है।

व्याकरणिक संरचना

संज्ञा एवं कारक व्यवस्था

- पुल्लिंग संज्ञाएँ प्राय: ओकारान्त होती हैं जो तिर्यक रूपों में आकारान्त हो जाती हैं।

  घोड़ो, लड़को, च्यालो

- स्त्रीलिंग का तिर्यक रूप प्राय: नहीं बदलता।
- परसर्ग दोनों बोलियों में काफी भिन्न हैं।

कारक	कुमाऊँनी	गढ़वाली
कर्ता	ले	न, ल
कर्म	कणि	खुणी, सणी
करण	थें	पुलै, बिटै
सम्बन्ध	को, के, की	को, के, की
अधिकरण	मुँ, माँ	मंग, मंजे

वचन व्यवस्था

पुल्लिंग शब्दों के बहुवचन इस प्रकार बनते हैं

कुमाऊँनी → 'न' रूप
घोड़न

गढ़वाली → ऊँ रूप
घोड़ूँ

सर्वनाम

कुमाऊँनी के बहुत से सर्वनाम कौरवी से और गढ़वाली के ब्रजभाषा से मिलते हैं।

U.P.S.C.

क्रिया व्यवस्था

दोनों बोलियों में, काफी साम्य है। परसर्गों की अपेक्षा सहायक क्रियाएँ छह रूप होती हैं।

ओ, आ, ई भूतकाल का तथा ल भविष्य काल का द्योतक है।

जैसे : गो (गया) : भूतकाल
जालो (जाएगा) : भविष्य काल

वर्तमान काल में दोनों बोलियों में भिन्नता देखी जा सकती है।

बोली	वर्तमान काल की क्रियाएँ
कुमाऊँनी	न रूप : जानै (जाता है)
गढ़वाली	द रूप : जादा, चलदा

साहित्य

लोकसाहित्य प्रचुरता से उपलब्ध है, किन्तु शिष्ट साहित्य की परंपरा नहीं है।

लोकगीतों का संकलन और संपादन किया जा रहा है।

गुमानी और कृष्ण पाण्डेय प्रसिद्ध हैं। (लोककवि)

शब्द

व्यावहारिक शब्दों में अनार्य तत्व किन्तु सांस्कृतिक शब्दावली में संस्कृत/हिन्दी का प्राधान्य

Scanned by CamScanner

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this part)

राजस्थानी

- राजस्थानी उपभाषा वर्ग का उद्भव राजस्थानी प्राकृत और राजस्थानी अपभ्रंश से माना जाता है।
- कुछ विद्वान राजस्थानी प्राकृत और अपभ्रंश को शौरसेनी का उपभेद मानते हैं।
- डिंगल को कुछ विद्वान मारवाड़ी का पूर्ववर्ती रूप मानने के पक्ष में हैं।
- इस उपभाषा में चार बोलियों का समावेश होता है जिनका क्षेत्र इस प्रकार है :-

---

मारवाड़ी : पश्चिमी राजस्थान (जोधपुर, अजमेर मेवाड़, किशनगढ़) और सिंध का कुछ भूभाग

जयपुरी / ढूंढाणी : पूर्वी राजस्थान (जयपुर के आसपास) हाड़ौती इसकी उपबोली है (बूंदी)

मालवी : राजस्थान के चित्तौड़गढ़, कोटा और म.प्र के रतलाम, इन्दौर, होशंगाबाद

मेवाती : अलवर, भरतपुर और हरियाणा के नूह और गुड़गाँव

- मालवी का बुंदेली से, ढूंढाणी का ब्रजभाषा से और मेवाती का हरियाणी से गहरा सम्बन्ध है।

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

ध्वनि व्यवस्था

1) ट वर्ग बहुला उपभाषा है।
2) ळ ध्वनि प्रयुक्त होती है।
3) अल्पप्राणी की प्रवृत्ति देखी जा सकती है।
4) मारवाड़ी और मेवाती में न का उच्चारण ण के रूप में होता है।
5) अनेक पुल्लिंग शब्द ओकारान्त होते हैं।
   इ फको

व्याकरण

कारक व्यवस्था

कर्म-सम्प्रदान → नै, नई, रै
करण-अपादान → सूँ
सम्बन्ध → रो, रा, री (मारवाड़ी/जयपुरी)
अधिकरण → मॉय को, का, की (मेवाती, मालवी)

बोलियों के विशिष्ट परसर्ग

जयपुरी → मालै (अधिकरण)
मालवी → सारू, कारणे (~~सम्प्रदान~~) सम्प्रदान
मेवाती → कैं (कर्म)

वचन व्यवस्था

ओं प्रत्यय
रातौं, बातौं

मालवी में हर जोड़कर
बयरा हर (स्त्रियाँ)

Scanned by CamScanner

क्रिया व्यवस्था सहायक क्रिया : ह औ छ रूप

कृदन्त

भूतकाल = ओ रूप (दीयो, गयो)

भविष्यकाल = गो (बोलेगो)

स (चलसूँ, चलसी)

वर्तमान = ऐ (बोलै, चलै)

संज्ञार्थ क्रिया = णो (बोलणो, चलणो)

जयपुरी

— भूतकाल में दीनू, लीनू आदि रूप भी बनते हैं।

मालवी

पूर्वकालिक क्रियाओं में ने प्रत्यय

मारने (मारकर)

मेवाती

हरियाणी के प्रभाव से ह के स्थान पर

स्य का प्रयोग होता है।

⇒ सूँ, सैं आदि

सर्वनाम

	मारवाडी	जयपुरी
उत्तम पु.	म्हे, म्हारो	मैं, मूने, म्हारो
मध्यम	तूं, थारो	तनै, थारो
अन्य	वा, उण	ऊँ, उन
प्रश्नवाचक	कुण, कोण	कुन, कॉन
संबंधवाचक	जिण, ~~[illegible]~~	जिन
निश्चयवाचक	यो	यो

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

मालवी के विशिष्ट ~~[illegible]~~ सर्वनाम

प्रश्नवाचक के (कौन), कॉई (क्या)
किनें (किसने)

मेवाती के विशिष्ट ~~[illegible]~~ सर्वनाम

पुरुष : हमा, तमा — हरियाणी के निकट
अन्य : वै को
निश्चय : ऐं को

विशिष्ट ध्वनि व्यवस्था

मारवाड़ी

दो क्लिक ध्वनियाँ विचारणीय हैं:
ध़ और स़ जिनका उच्चारण क्रमशः द-ध और स-ह के बीच में होता है

मालवी

- स्वरों का दीर्घीकरण : लाकड़ी, कापड़ा
- ड़ के स्थान पर ड
- ऐ, औ की अपेक्षा ए, ओ का प्रयोग

Scanned by CamScanner

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this part)

पूर्वी हिन्दी

- पूर्वी उत्तरप्रदेश और छत्तीसगढ़
  म.प्र का निकटवर्ती क्षेत्र
- जितना साम्य इस उपभाषा की बोलियों में है उतना अन्य किसी उपभाषा में नहीं। घनिष्ठ संबंध
- इसका उद्भव अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है।

अवधी

भौगोलिक क्षेत्र :- अवधी का सम्बन्ध अवध क्षेत्र से है जिसके अन्तर्गत उ.प्र के लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, फैजाबाद सीतापुर, गोण्डा, बाराबंकी आदि जिलों का समावेश होता है। इसे उत्तरी कोसली और बैसवाड़ी के नामों से भी जाना जाता है। फीजी, मॉरिशस, द. अफ्रीका, सूरीनाम, त्रिनिदाद-टोबैगो में भी बोली जाती है।

ध्वनि संरचना

1) प्रायः उकारान्तता की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

2) ऐ और औ का उच्चारण संध्यक्षरों के रूप में होता है (अइ, अउ)

उदाहरण: अइसा, अउरत

3) अन्य ध्वनिगत विशिष्टता इस प्रकार है -

ण > न (बान)   ड़ > र (लरिका)

व > ब (बिस्वामित्र)   क्ष > छ (लछिमन)

श, ष > स (बरसा)

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

व्याकरण

संज्ञा एवम कारक व्यवस्था

1) संज्ञा के तीन रूप मिलते हैं।
लरिका, लरिकवा, लरिकउना।
नदी, नदिय, नदीवा

2) प्रमुख परसर्ग इस प्रकार हैं -

कर्ता -	x
कर्म -	का, के, कह
सम्प्रदान -	कह्या, बरे
करण -	से, ते, सेंति, सों
अपादान	
सम्बन्ध -	कर, केर, केरे, केरि
अधिकरण -	मह, ऑझ, पर

वचन

1) अकारान्त और आकारान्त शब्दों का बहुवचन ए, ऐं, वे, ओं प्रत्ययों से बनते हैं।

2) कभी-कभी एकवचन और बहुवचन रूप समान होते हैं।

3) बहुवचन के तिर्यक रूप न, अन, न्ह, न्हि प्रत्ययों से बनते हैं।

बात > बातें, बातन — घोड़ा > घोड़वे, घोड़वन
सखी > सखिन्ह, सखी — लरिका > लरिका, लरिकन
बिटिया > बिटियाँ, बिटियन

Scanned by CamScanner

लिंग व्यवस्था

स्त्रीलिंग संज्ञाऐं ई, इनि, आइनि, इया प्रत्ययों से बनती हैं।

माली > मालिनि
बेटा > बिटिया
पंडित > पंडिताइनि

सर्वनाम

सर्वनाम के रूपों की संक्षिप्त तालिका प्रस्तुत है —

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	(मैं) मोहि, मोर	हम, हमहि, हमार
मध्यम	(तू, तुइ) तो, तोर	(तुम, तुम्ह) तुम्हहिं, तुम्हार, तुम्हार
अन्य	(ऊ, ओ) ओहि, ओकर	(वइ) उन, उन्ह, ओनकर
निश्चय वाचक	(ई), ए, एहि, एकर	(ये), एहिं, इन कर
अनिश्चय वाचक	कोउ, काहु, कछु	
प्रश्नवाचक	कवन, का, काहे (तिर्यक)	
संबंधवाचक	जेई, जवन	

Scanned by CamScanner

विशेषण

प्रायः अकारान्त होते हैं जो लिंग और वचन के आधार पर परिवर्तित नहीं होते -

छोट लरकवा छोट बिटिया

छोट बिटियन

क्रिया व्यवस्था

1) कृदन्त इस प्रकार होते हैं -

वर्तमान	त रूप	देखत, देखित
भूतकाल	आ रूप न्ह रूप	देखा, पावा दीन्ह, लीन्ह
भविष्य	ब रूप ह रूप	जाब, चलब करहिं, करिहैं

2) सहायक क्रियाएँ इस प्रकार हैं -

वर्तमान	ह रूप अह रूप	हवइ, हउ अहेंठ, अही
भूतकाल	रह रूप भ रूप	रहहि, रहउ भए, भई
भविष्य	हो रूप	होब, होबइ, होयहुँ

Scanned by CamScanner

इस भाग में (Don't write in this part) संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

3) **संभावनार्थ क्रिया**

ब रूप - देखब, करब

4) **पूर्वकालिक क्रिया**

इके रूप - देखिके, करिके

अव्यय — **सार्वनामिक विशेषण**

इहाँ, उहाँ, आजु, कालहुँ, अइसन, जइसन

- इहाँ, उहाँ — स्थानवाचक
- आजु, कालहुँ — कालवाचक
- अइसन, जइसन — ~~[illegible]~~

बघेली

- कुछ विद्वान इसे अवधी की उपबोली मानने के पक्ष में हैं, इतनी घनिष्ठता है।
- रीवा, शाहडोल, सतना, मैहर आदि बघेलखण्ड के जिलों में बोली जाती है।

ध्वनि

1) व के स्थान पर ब के उच्चारण की प्रवृत्ति अधिक है।
   आवा (अवधी) > आबा (बघेली)

2) ए और ओ के उच्चारण में क्रमशः य और व ध्वनियों का मिश्रण होता है।
   श्येत, ध्वाड़

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

परसर्ग

विशिष्ट परसर्ग हैं -

कर्म / सम्प्रदान - क, कहा

करण / सम्प्रदान - तार

सर्वनाम

म्वाँ, मोहि, त्वाँ, तोहि विशिष्ट सर्वनाम रूप हैं।

क्रिया व्यवस्था

1) भूतकाल में रहा, रहेन (अवधी) के अलावा ता, तें भी प्रचलित हैं।

2) भविष्यकाल में ब रूप की अपेक्षा ह रूप की प्रधानता है।

कहिहों, कहिहैं

छत्तीसगढ़ी

- वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य की बोली है।
- दक्षिणी कोसली भी कहा जाता है।

ध्वनि व्यवस्था

1) महाप्राणीकरण (जन > झन) की प्रवृत्ति
दौड़ > धौड़)

2) अघोषीकरण (खराब > खराप) की प्रवृत्ति

3) स के स्थान पर छ का प्रयोग
सीता (छीता)

4) मराठी के प्रभाव से ष्ट का उच्चारण रु जैसा भी होता

इस भाग में कुछ न लिखें
Don't write anything in this part

कारक व्यवस्था

परसर्ग

1) कुछ विशिष्ट कारक/परसर्ग इस प्रकार हैं–

कर्म / सम्प्रदान = ला

करण / अपादान = ले

2) सम्बन्ध कारक के परसर्ग लिंग के अनुसार प्रायः परिवर्तित नहीं होते।

निश्चयार्थ शब्द

जिस प्रकार अंग्रेजी में "The" का प्रयोग होता है, उसी प्रकार छत्तीसगढ़ी में 'हर' का प्रयोग होता है।

टूरा-हर (लड़का)

वचन

मन प्रत्यय से बहुवचन रूप बनते हैं।

हममन, टूरामन

क्रिया

1) संज्ञार्थ क्रिया न और ब दोनों रूपों में प्रचलित है – देखन, देखब आदि

2) क्रिया रूपों में त और ह ध्वनियों को मिलाकर थ का प्रयोग होता है –

जात हऊँ > जाथऊँ

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या
(Question No.)

U.P.S.C.

(छत्तीसगढ़ी साहित्य)

1) राज्य निर्माण के बाद अस्मिता बोध में वृद्धि हुई है, मध्यकालीन साहित्य के शोध और मौलिक लेखन को बल मिला है।

2) कवि सम्मेलन, पत्रिकाएँ

3) कबीर दास के शिष्य धनी धर्मदास को आदि कवि का दर्जा प्राप्त है जिनके पदों का संकलन प्रकाशित हुआ है।

4) मुकुटधर पांडेय, कुंजबिहारी चौबे, बंशीधर पाण्डेय आधुनिक कवि हैं।

5) उपन्यास
हम हीरा के कहिनी - बंशीधर शर्मा
छेरछेरा - कृष्णकुमार शर्मा

6) जयप्रकाश मानस, बिहारी लाल साहू प्रमुख कहानीकार हैं।

7) उर्मिला शुक्ला - महिला
कोदूराम दलित - दलित

8) हाइकु संग्रह, व्यंग्य लेखन

Scanned by CamScanner

पश्चिमी हिन्दी

1) शौरसेनी अपभ्रंश से उद्भव
2) क्षेत्र विस्तार और जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा उपभाषा वर्ग
3) अंबाला से कानपुर तक और देहरादून से विदर्भ तक फैला है। कर्नाटक, आँध्र, तेलंगाना में दक्खिनी हिन्दी का प्रयोग।
4) अमीर खुसरो से लेकर वर्तमान तक अनेक महान रचनाकार
5) खड़ी बोली, हरियाणी, ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी बोलियाँ
दक्खिनी भी खड़ी बोली पर आधारित
6) मानक हिन्दी का मूल-आधार खड़ी बोली।

ब्रजभाषा

क्षेत्र:- ब्रजमंडल की बोली। मथुरा, आगरा, अलीगढ़ इसका केन्द्र है। रीतिकाल में समस्त हिन्दी प्रदेश की काव्यभाषा

ध्वनि संरचना

1) ओकारान्तता इसकी विशिष्टता है।
2) ऐ, औ का सामान्य व संतुलित उच्चारण होता है।

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

3) ड़ > र (निबोरि, जुरतो)
4) ण > न (बान)
5) अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति
साहूकार > साउकार

(व्याकरण)

संज्ञा एवम कारक व्यवस्था

कर्ता	ने, नें
कर्म	को, कें, कूँ, को, कें, कु
करण	
अपादान	सो, सों, सौं, तैं, ते, तें
संबंध	को, के, की
अधिकरण	में, पे, माह

→ केवल भूतकालिक सकर्मक क्रिया में

वचन

1) ए, एँ, ओं प्रत्यय से बहुवचन बनते हैं।

2) तिर्यक रूपों में न, अन, इन
रोटी > रोटिन
किताब > किताबें, किताबन
बिटिया > बिटियन, बिटियाँ
सखी > सखी, सखिअन

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

लिंग

ई, आइन,
आनी
बेटी, पंडिताइन, देवरानी

सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं, मोहि, मेरो	हम, हमहि, हमारो
मध्यम पुरुष	तु, तोहे, तेरो	तुम्ह, तुमहि, तिहारो
अन्य पुरुष	वो, वाहि, वाको	वे उन्ह, उन्हें, उन्हको
निश्चयवाचक	यह, याहि, येको	ये, इन्हें, इनको
अनिश्चयवाचक	कोउ काहु, कछु	
प्रश्नवाचक	कौन, कहा, काहि	
संबंधवाचक	जाई, जौन	

विशेषण

विशेष्यानुसार
कालो छोरो, काली छोरी
काले छोरे

Scanned by CamScanner

क्रिया व्यवस्था

1) कृदन्त

वर्तमान	त रूप	मारत, मारतु मारति
भूतकाल	औ, यौ न	, कर्यौ, दीयौ लीनी, दीना
भविष्य	ग ह	करैगो करिहै

2) सहायक क्रियाएँ

वर्तमान	ह	है, हौं
भूतकल	हुत भ	हुतौ, हुती भयौ
भविष्य	ग ह	हौवैगो

3) संज्ञार्थ - खेलन, देखन

4) पूर्वकालिक - इ - देखि, करि

अव्यय

स्थानवाचक - हतै, उतै

कालवाचक - आज, काल

सार्वनामिक विशेषण

ऐसो, जैसो

कन्नौजी

1) कुछ विद्वान कनौजी को ब्रजभाषा की उपबोली मानते हैं।
2) प्राचीन कान्यकुब्ज की बोली है जिसमें फर्रुखाबाद, इटावा, कानपुर, हरदोई आदि जिलों का समावेश होता है।

ध्वनि

1) पुल्लिंग शब्द उकारान्त होते हैं।
   रामु, किसानु, पेटु
2) ड़, ड और ढ, ढ़ में भेद स्पष्ट है।
3) ह > अ में परिवर्तन जाहि > जाइ
4) आरंभिक अ > औ, अकारान्त > ओकारान्त
   कौकरा, छोटो
5) अनुनासिकीकरण बाँत

परसर्ग

कर्म - का, कौ
संबंध - कर
अधिकरण - माँ, महिआँ

क्रिया व्यवस्था सहायक

1) वर्तमान काल - हूँ, हौं, हैगो, हैगो
   भूतकाल - हतो, हते, हती
   भविष्यकाल - इहौं, इहैं, इहइ
   - ग रूप ही प्रचलित हैं।
2) क्रियारूपों में व्यंजन संयोग की प्रवृत्ति
   थक गयो > थग्गयो

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

बुन्देली

1) बुंदेलखंड क्षेत्र में उ.प्र के झाँसी, मैनपुरी और म.प्र के ग्वालियर, बालाघाट, टीकमगढ़ तथा महाराष्ट्र का विदर्भ
2) क्षेत्र की दृष्टि से सबसे व्यापक बोली

ध्वनि

1) ऐ, औ के दोनों रूपों में उच्चारण
2) अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति
   आदा, दूद
3) ह > अ
   रहिके > रइके
4) ब > म (बबूल > बूमरा)
   स > छ (छिड़ियाँ)
   ड़ > र (झगरा)

लिंग दोनों
वचन दोनों

परसर्ग

सम्प्रदान - के लाने, के काजे
कर्म - खों
संबंध - खो

क्रिया

ह का लोप वर्तमान = औं, आय, आत
भूतकाल = ह = हुतो
ग = होगे
भ = होंने
भविष्य = ता, ते, ती रूप

Scanned by CamScanner

खड़ी बोली

1) ग्रियर्सन ने इसे कौरवी नाम दिया
2) उद्‌भव - शौरसेनी अपभ्रंश का उत्तरी रूप
3) आधुनिक मानक हिन्दी का यही आधार है।
4) क्षेत्र = देहरादून से मेरठ और दिल्ली तक। बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, मुजफ्फरनगर आदि जिलों का समावेश → कुरु जनपद

ध्वनि व्यवस्था

1) प्रायः आकारान्त बोली है।
2) ऐ > ए, औ > ओ (ओरत, एनक)
3) महाप्राण ध्वनियों का अल्पप्राणीकरण
   धोखा > धोका
4) न के स्थान पर ण का प्रयोग (माणस)
5) ल > ळ (बाळक)
6) र, ल, ड़ ध्वनियाँ आपस में बदल जाती है। (ड़ > ड्ड) बड्डा
   चपरासी > चपड़ासी (र > ड़)
7) व्यंजनों के द्वित्वीकरण की प्रवृत्ति
   बाप्पू, छोट्टा
8) आरंभिक स्वरों का लोप
   इकट्ठा > कट्ठा

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

संज्ञा - कारक व्यवस्था

कर्ता - ने, णें
कर्म - को, नैं
करण - तैं, ऐती
सम्प्रदान - खातर
संबंध - का, के, की
अधिकरण - में, पै

वचन

ए - बेटे, एँ - पुस्तकें, रोटी - रोटियाँ
तिर्यक रूप = ओं = रोटियों, बच्चों, पुस्तकों

लिंग

अन, ई, नी, आनी
मालन, जाटनी, बेटी, पंडितानी

सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैं, मुज, मेरा	हम, हमें, हमारा / म्हारा
मध्यम	तूँ, [illegible] तेरा	तम, तमें, तुम्हारा / थारा
अन्य	वो, वू, उसका	वे, उनका
निश्चयवाचक	आ, इस	
अनिश्चयवाचक	कुछ, कोई	
प्रश्नवाचक	के, कोण, किसका	
संबंधवाचक	जो, जोण	

Scanned by CamScanner

विशेषण

छोटा लड़का, छोटी लड़की
छोटे लड़कों

क्रिया संरचना

1) वर्तमान काल में त तत्व का प्रयोग नहीं होता।
मारू हूँ मारे हैं / जावे हैं आदि रूप बनते हैं।

2) भूतकाल के रूपों में
करे था
करया

3) भविष्यकाल के रूप में द्वित्वीकृत ग का प्रयोग होता है।
जाऊँग्गा, जावैग्गा आदि

4) संज्ञार्थ क्रिया ण रूप होती है।
चलण, पढ़ण

5) पूर्वकालिक क्रिया में कर प्रत्यय जुड़ता है
जाकर, रोकर

अव्यय	सार्वनामिक विशेषण
कालवाचक - कद, जिब, इब स्थानवाचक - इदर, उदर, जिदर	ऐसा, जैसा, कैसा

Scanned by CamScanner

ग्रियर्सन

U.P.S.C.

प्रश्न संख्या (Question No.)

हरियाणी

1) ग्रियर्सन ने इसे बाँगरु नाम दिया है।

2) इसका क्षेत्र:
दिल्ली का कुछ भाग, हरियाणा का अधिकांश भाग (जिन्द, करनाल, रोहतक, सोनीपत, पानीपत) अम्बाला, नाभा जैसा पँजाब का कुछ भाग

3) खड़ी बोली से निकला, पँजाबी का प्रभाव

ध्वनि संरचना

1) खड़ी बोली की सभी प्रवृत्तियाँ
2) ह के स्थान पर स का उच्चारण।
है > सै हूँ > सूँ

परसर्ग

1) खड़ी बोली के सभी परसर्ग
2) इसके अतिरिक्त
सम्प्रदान = की त्याँ
अधिकरण = मह, माँह

वचन

बहुवचन के तिर्यक रूपों में ओं / यों के स्थान पर आँ का प्रयोग होता है:-
घराँ से, छोहरियाँ ने

क्रिया संरचना

1) भूतकाल और भविष्यकाल की सहायक क्रियाएँ खड़ी बोली के समान

2) वर्तमान में ह > स

(एक) (बहु)

उ.पु सूँ सैं

म.पु से सो

अ.पु सै सैं

वर्तमान काल के क्रियारूप दो तरह के होते हैं -

मैं चालूँ सूँ मैं चलदा सूँ

हम चाल्लाँ साँ हम चलदे सैं

क्रिया विशेषण अव्यय

स्थानवाचक - आड़े (यहाँ)

ओड़े (वहाँ)

कड़े (कहाँ)

जड़े (जहाँ)

कालवाचक - जिद (जब), कद (कब)

काल्ह, परसूँ

प्रश्न संख्या
(Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में (Don't write in this)

दक्खिनी

1) दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में बोली जाने वाली हिन्दी की शैली जो मुख्यत: खड़ी बोली पर आधारित है। इस पर कन्नड़, तेलगु और मराठी का प्रभाव भी देखा जा सकता है। अधिकतर मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त होने के कारण इस पर अरबी-फारसी का भी प्रभाव है।

2) क्षेत्र: तेलंगाना, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश गुलबर्गा, बीजापुर, गोलकुंडा, बीदर, विदर्भ, मराठवाडा (वर्तमान क्षेत्र)

3) उन्नत साहित्यिक रचनाएँ

4) राजनीतिक, व्यापारी, धार्मिक कारण

5) दकनी, देहलवी, हिन्दवी नामों से भी जाना जाता है।

6) इसका विकास उर्दू से काफी पहले हो चुका था। अत: इसे हिन्दी की बोली मानना ही समीचीन प्रतीत होता है।

Scanned by CamScanner

ध्वनि संरचना

1) खड़ी बोली के समान। कुछ अपनी विशिष्ट प्रवृत्तियाँ।

2) ग़, फ़, क़, ख़ जैसी ध्वनियाँ

3) कहीं-कहीं महाप्राणीकरण
पलक > पलख, पहचान > पछान

4) अघोषीकरण की प्रवृत्ति
खूबसूरत > खूपसूरत

5) स्वरों का ह्रस्वीकरण
आदमी > अदमी, सफाई > सफई

6) म्ब के स्थान पर म्म
गुम्बद > गुम्मज, कम्बख्त > कम्मख्त

7) न्द / न्ध > न
चानणी

8) ध्वनि विपर्यय की प्रवृत्ति
कीचड़ > चीकड़, मतलब > मतबल

9) ड़ > ड पड़ा

10) अल्पप्राणीकरण मुजे, धोका, भूरक

व्याकरण

परसर्ग

कर्ता - ने ×
कर्म - कू, कूँ
करण / अपादान - सू, सूँ
सम्प्रदान - के तईं
संबंध - क्यों, केरा
अधिकरण - मने, पो, पे

Scanned by CamScanner

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं, मुंजे, मेरेकूं	हम, हमन, हमना
मध्यम	तू, तुज	तुम, आप, तुमना
अन्य	वो, उसने,	उनन, उनने

वचन

1) ऑं परसर्ग द्वारा : बातां, चिरागां

2) ए, अन का भी प्रयोग होता है

राजा > राजे , जन > जनन

विशेषण

1) स्त्रीलिंग के विशेष विशेष्य के वचन के अनुसार परिवर्तित होते हैं।

अच्छी लड़की > अच्छियाँ लड़कियाँ

2) संख्यावाचक विशेषणों का विशिष्ट उच्चारण

छे, आठ, वन्नीस

क्रिया संरचना

1)

काल	सहायक क्रिया	कृदन्तीय रूप
वर्तमान	है, हूँ, हैगा	देखत, देखता, देखती
भूतकाल	था, थ्या	कहया, बोल्या
भविष्य	होगा, होंगे, होसन	चलसीं, चलसूँ

Scanned by CamScanner

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

इस भाग में ... संख्या (Don't write ... in this part ... Question No.)

2) पूर्वकालिक क्रियाएँ - यकर प्रत्यय, के
जायकर, खायकर
चलके, जाके

3) संज्ञार्थ क्रिया : न/ना प्रत्यय
चलन, चलना

Scanned by CamScanner